



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-

4176

मोदी युग में भारतीय विदेश नीति में सामरिक स्वायत्तता और बहुध्रुवीय विश्व

व्यवस्था

परीक्षित

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग, बी.एम.यू. अस्थल बोहर, रोहतक।

Reg. No. 22-BMU-7533

Email Id:- prixitparashar1997@gmail.com

डॉ. बी. प्रकाश (प्रोफेसर)

शोध निर्देशक, राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग, बी.एम.यू. अस्थल बोहर, रोहतक।

सारांश

वर्ष 2014 के बाद भारतीय विदेश नीति में उल्लेखनीय सक्रियता, आत्मविश्वास और राष्ट्रीय हितों के प्रति स्पष्ट प्रतिबद्धता दिखाई देती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने अपनी विदेश नीति को केवल पारंपरिक कूटनीतिक संबंधों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे सुरक्षा, अर्थव्यवस्था, ऊर्जा, रक्षा, तकनीक और वैश्विक नेतृत्व से जोड़ा। इस काल में भारत ने अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस और यूरोपीय देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी को मजबूत किया, वहीं रूस, ईरान, खाड़ी देशों, मध्य एशिया और वैश्विक दक्षिण के देशों के साथ भी संतुलित संबंध बनाए रखे। इससे स्पष्ट होता है कि भारत किसी एक शक्ति-गुट पर निर्भर रहने के बजाय स्वतंत्र निर्णय-क्षमता और सामरिक स्वायत्तता को अपनी विदेश नीति का आधार बनाता है। रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान भारत द्वारा रूस से ऊर्जा आयात जारी रखना, अमेरिका के साथ रक्षा और तकनीकी सहयोग बढ़ाना तथा चीन के साथ सीमा तनाव के बावजूद संवाद और सामरिक तैयारी दोनों को साथ लेकर चलना इसी नीति का उदाहरण है। मोदी युग में भारत ने क्वाड, जी-20, ब्रिक्स, एस.सी.ओ. और इंडो-पैसिफिक नीति जैसे मंचों के माध्यम से बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में अपनी भूमिका को अधिक प्रभावशाली बनाया है। जी-20 की अध्यक्षता, वैश्विक दक्षिण की आवाज उठाना, ऊर्जा सुरक्षा को प्राथमिकता देना और रक्षा आत्मनिर्भरता पर बल देना भारत की बदलती विदेश नीति की प्रमुख विशेषताएँ हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में 2014 से वर्तमान तक भारतीय विदेश नीति में सामरिक स्वायत्तता, रूस-अमेरिका संतुलन, चीन की सामरिक चुनौती, बहुपक्षीय मंचों में भारत की सक्रियता, ऊर्जा सुरक्षा और राष्ट्रीय हित आधारित कूटनीति का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द: भारतीय विदेश नीति, सामरिक स्वायत्तता, मोदी युग, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, क्वाड, जी-20, ब्रिक्स, एस.सी.ओ., इंडो-पैसिफिक, ऊर्जा सुरक्षा।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

प्रस्तावना

भारत की विदेश नीति स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही स्वतंत्र निर्णय-क्षमता, राष्ट्रीय हितों की रक्षा, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, उपनिवेशवाद-विरोध, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और वैश्विक शांति जैसे मूल सिद्धांतों पर आधारित रही है। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने विदेश नीति को गुटीय राजनीति से दूर रखते हुए गुटनिरपेक्षता, पंचशील और विश्व-बंधुत्व की भावना से जोड़ा। शीत युद्ध के समय विश्व राजनीति मुख्यतः दो शक्ति-गुटों – अमेरिका और सोवियत संघ के बीच विभाजित थी। उस समय भारत ने किसी एक गुट में शामिल होने के बजाय स्वतंत्र विदेश नीति अपनाई, ताकि राष्ट्रीय हितों, विकासात्मक आवश्यकताओं और अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को सुरक्षित रखा जा सके। समय के साथ विश्व व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन हुए। सोवियत संघ के विघटन, वैश्वीकरण, उदारीकरण, चीन के उदय, आतंकवाद, ऊर्जा संकट, समुद्री सुरक्षा, तकनीकी प्रतिस्पर्धा और क्षेत्रीय संघर्षों ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति को नया स्वरूप दिया। वर्तमान समय में विश्व व्यवस्था केवल अमेरिका या किसी एक शक्ति पर आधारित नहीं है, बल्कि अमेरिका, चीन, रूस, यूरोपीय संघ, जापान, भारत और अन्य उभरती शक्तियाँ विश्व राजनीति को प्रभावित कर रही हैं। इसी कारण आज की व्यवस्था को बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था कहा जाता है। इस बदलते अंतरराष्ट्रीय वातावरण में भारत के लिए केवल आदर्शवादी विदेश नीति पर्याप्त नहीं थी, उसे व्यावहारिक, सक्रिय और राष्ट्रीय हित-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता थी।

वर्ष 2014 के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय विदेश नीति में सक्रियता और आत्मविश्वास अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस काल में भारत ने पड़ोसी देशों, प्रमुख वैश्विक शक्तियों, खाड़ी देशों, अफ्रीकी देशों, मध्य एशिया और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र के साथ संबंधों को नई दिशा दी। भारत ने अमेरिका के साथ रक्षा, तकनीक और आर्थिक सहयोग बढ़ाया, वहीं रूस के साथ अपने पुराने सामरिक संबंधों को बनाए रखा। चीन के साथ सीमा विवाद और सामरिक प्रतिस्पर्धा के बावजूद भारत ने संवाद, सैन्य तैयारी और कूटनीतिक संतुलन को साथ-साथ अपनाया। मोदी युग में भारत की विदेश नीति का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष सामरिक स्वायत्तता है। इसका अर्थ है कि भारत किसी बाहरी दबाव या शक्ति-गुट के प्रभाव में आकर निर्णय नहीं लेता, बल्कि अपने राष्ट्रीय हित, सुरक्षा, ऊर्जा आवश्यकता, आर्थिक विकास और वैश्विक भूमिका को ध्यान में रखकर नीति बनाता है। क्वाड में सक्रिय भागीदारी के साथ ब्रिक्स और एस.सी.ओ. में उपस्थिति, रूस से ऊर्जा सहयोग के साथ अमेरिका से रक्षा साझेदारी और जी-20 में वैश्विक दक्षिण की आवाज उठाना इसी स्वतंत्र और संतुलित कूटनीति का प्रमाण है। इस प्रकार 2014 के बाद भारतीय विदेश नीति अधिक सक्रिय, व्यावहारिक, बहुआयामी और राष्ट्रीय हित आधारित रूप में विकसित हुई है।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-

4176

सामरिक स्वायत्तता की अवधारणा

सामरिक स्वायत्तता आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। इसका सामान्य अर्थ यह है कि कोई भी राष्ट्र अपनी विदेश नीति, सुरक्षा नीति और आर्थिक नीति से संबंधित निर्णय किसी बाहरी दबाव, शक्ति-गुट या वैचारिक बंधन के आधार पर न लेकर अपने राष्ट्रीय हितों, सुरक्षा आवश्यकताओं, आर्थिक प्राथमिकताओं और दीर्घकालिक रणनीतिक लक्ष्यों को ध्यान में रखकर ले। यह नीति किसी देश को अंतरराष्ट्रीय मंच पर स्वतंत्र, लचीला और व्यावहारिक व्यवहार करने की क्षमता प्रदान करती है। भारत जैसे बड़े और उभरते हुए देश के लिए सामरिक स्वायत्तता अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि भारत की सुरक्षा, अर्थव्यवस्था, ऊर्जा, समुद्री हित, रक्षा सहयोग और वैश्विक भूमिका अनेक देशों और क्षेत्रों से जुड़ी हुई है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई थी। उस समय विश्व राजनीति अमेरिका और सोवियत संघ के दो प्रमुख गुटों में विभाजित थी। भारत ने किसी एक गुट में शामिल होने के बजाय स्वतंत्र विदेश नीति को प्राथमिकता दी। गुटनिरपेक्षता का उद्देश्य था कि भारत अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए विश्व शांति, उपनिवेशवाद-विरोध और समानता पर आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था का समर्थन करे। परंतु वर्तमान समय की परिस्थितियाँ शीत युद्ध काल से भिन्न हैं। आज विश्व व्यवस्था बहुध्रुवीय हो चुकी है, जिसमें अमेरिका, चीन, रूस, यूरोपीय संघ, जापान, भारत और अन्य उभरती शक्तियाँ अलग-अलग क्षेत्रों में प्रभाव रखती हैं। इसलिए आज भारत की विदेश नीति केवल गुटनिरपेक्षता तक सीमित नहीं है, बल्कि वह सामरिक स्वायत्तता और बहु-संरेखण पर आधारित है।

मोदी युग में सामरिक स्वायत्तता भारतीय विदेश नीति का प्रमुख आधार बनकर सामने आई है। भारत ने यह स्पष्ट किया है कि वह किसी एक शक्ति-गुट का स्थायी अनुयायी नहीं बनेगा, बल्कि परिस्थिति और राष्ट्रीय हित के अनुसार विभिन्न देशों के साथ संबंध विकसित करेगा। भारत अमेरिका के साथ रक्षा, तकनीक, व्यापार और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सहयोग बढ़ाता है, लेकिन साथ ही रूस के साथ पारंपरिक रक्षा साझेदारी और ऊर्जा संबंध भी बनाए रखता है। रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान भारत ने रूस से तेल आयात जारी रखकर यह दिखाया कि उसकी विदेश नीति बाहरी दबावों से अधिक अपने आर्थिक और ऊर्जा हितों से निर्देशित होती है।

इसी प्रकार भारत क्वाड में अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ मिलकर इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में नियम-आधारित व्यवस्था का समर्थन करता है, लेकिन वह इसे किसी सैन्य गठबंधन के रूप में स्वीकार नहीं करता। दूसरी ओर भारत ब्रिक्स और एस.सी.ओ. जैसे मंचों में भी सक्रिय रहता है, जहाँ रूस और चीन जैसे देश शामिल हैं। यह भारत की संतुलित और



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

स्वतंत्र कूटनीति को दर्शाता है। चीन के साथ सीमा विवाद के बावजूद भारत संवाद, सैन्य तैयारी और बहुपक्षीय सहयोग तीनों को साथ लेकर चलता है। इस प्रकार सामरिक स्वायत्तता भारत को अंतरराष्ट्रीय राजनीति में स्वतंत्र निर्णय लेने की शक्ति देती है। यह नीति भारत को एक ओर अपनी सुरक्षा और आर्थिक हितों की रक्षा करने में सक्षम बनाती है, वहीं दूसरी ओर उसे बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में एक जिम्मेदार, संतुलनकारी और उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करती है। मोदी युग में सामरिक स्वायत्तता केवल विदेश नीति का सिद्धांत नहीं, बल्कि भारत की व्यावहारिक कूटनीति का केंद्रीय आधार बन गई है।

भारत की आर्थिक कूटनीति और वैश्विक व्यापार

मोदी युग में विदेश नीति केवल सुरक्षा या कूटनीतिक संबंधों तक सीमित नहीं रही, बल्कि व्यापार, निवेश, तकनीक, आपूर्ति श्रृंखला और सेवा क्षेत्र से भी जुड़ गई है। भारत का कुल निर्यात और आयात दोनों बढ़े हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि भारत वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में अधिक सक्रिय भूमिका निभा रहा है। प्रेस सूचना ब्यूरो के अनुसार वित्त वर्ष 2025–26 में भारत का कुल निर्यात 860.09 अरब अमेरिकी डॉलर और कुल आयात 979.40 अरब अमेरिकी डॉलर अनुमानित रहा, जबकि वित्त वर्ष 2024–25 में कुल निर्यात 825.26 अरब अमेरिकी डॉलर और कुल आयात 919.92 अरब अमेरिकी डॉलर था।

तालिका 1: भारत का कुल व्यापार, 2024–25 और 2025–26

व्यापार संकेतक	वित्त वर्ष 2024–25	वित्त वर्ष 2025–26
वस्तु निर्यात	437.7	441.78
वस्तु आयात	721.2	774.98
सेवा निर्यात	387.55	418.31
सेवा आयात	198.72	204.42
कुल निर्यात	825.26	860.09
कुल आयात	919.92	979.4
कुल व्यापार संतुलन	–94.66	–119.3

स्रोत: वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय/प्रेस सूचना ब्यूरो, 2026.

इस तालिका से स्पष्ट है कि भारत का सेवा निर्यात मजबूत आधार बना हुआ है। वस्तु व्यापार में घाटा अधिक है, परंतु सेवा क्षेत्र भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धात्मक शक्ति प्रदान करता है। यह आर्थिक क्षमता भारत की विदेश नीति को अधिक प्रभावशाली बनाती है।

रूस और अमेरिका के साथ संतुलित संबंध



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-

4176

मोदी युग में भारतीय विदेश नीति की सबसे प्रमुख विशेषता रूस और अमेरिका के साथ संतुलित संबंध बनाए रखना है। भारत ने अमेरिका के साथ संबंधों को रक्षा, तकनीक, अंतरिक्ष, व्यापार, ऊर्जा और इंडो-पैसिफिक नीति के आधार पर मजबूत किया है। वर्ष 2024 में भारत और अमेरिका के बीच वस्तु एवं सेवा व्यापार लगभग 212.3 अरब अमेरिकी डॉलर रहा, जो दोनों देशों के बढ़ते आर्थिक संबंधों को दर्शाता है। फरवरी 2025 के भारत-अमेरिका संयुक्त वक्तव्य में रक्षा बिक्री, सह-उत्पादन, रक्षा औद्योगिक सहयोग और सैन्य अंतर-संचालन को बढ़ाने पर विशेष बल दिया गया। इससे स्पष्ट है कि अमेरिका भारत के लिए तकनीक, रक्षा आधुनिकीकरण और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण साझेदार बन चुका है।

दूसरी ओर रूस भारत का पुराना और विश्वसनीय सामरिक साझेदार है। भारत की रक्षा प्रणाली में रूसी उपकरणों की भूमिका लंबे समय से महत्वपूर्ण रही है। जुलाई 2024 में 22वें भारत-रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन में दोनों देशों ने "विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त सामरिक साझेदारी" को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता दोहराई। इसी बैठक में दोनों देशों ने 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को 100 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुँचाने का लक्ष्य रखा। वित्त वर्ष 2024-25 में भारत-रूस व्यापार 68.7 अरब अमेरिकी डॉलर के रिकॉर्ड स्तर पर पहुँचा, जिसमें भारत का रूस को निर्यात 4.9 अरब अमेरिकी डॉलर और रूस से आयात 63.8 अरब अमेरिकी डॉलर रहा।

रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद पश्चिमी देशों ने रूस पर प्रतिबंध लगाए, लेकिन भारत ने ऊर्जा सुरक्षा और राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता दी। वित्त वर्ष 2024-25 में रूस भारत का सबसे बड़ा कच्चा तेल आपूर्तिकर्ता रहा। इस अवधि में भारत ने रूस से लगभग 1.76 मिलियन बैरल प्रतिदिन कच्चा तेल आयात किया, जो भारत के कुल तेल आयात का लगभग 36 प्रतिशत था। इस प्रकार भारत ने अमेरिका से रणनीतिक और तकनीकी सहयोग बढ़ाया, जबकि रूस के साथ रक्षा, ऊर्जा और ऐतिहासिक संबंध बनाए रखे। यह संतुलन दर्शाता है कि भारत किसी एक शक्ति-गुट के दबाव में नहीं, बल्कि अपने राष्ट्रीय हित और सामरिक स्वायत्तता के आधार पर विदेश नीति संचालित करता है।

ऊर्जा सुरक्षा और रूस से तेल आयात

ऊर्जा सुरक्षा भारत की विदेश नीति का बहुत महत्वपूर्ण पक्ष है। भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बड़े स्तर पर कच्चे तेल का आयात करता है। रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद रूस से रियायती दरों पर तेल उपलब्ध हुआ, जिसे भारत ने अपने आर्थिक हित और उपभोक्ता हित के आधार पर खरीदा। वित्त वर्ष 2024-25 में रूस भारत का सबसे बड़ा कच्चा तेल आपूर्तिकर्ता रहा; रूस से भारत का तेल आयात 1.76 मिलियन बैरल प्रतिदिन था,



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

जो भारत के कुल तेल आयात का लगभग 36 प्रतिशत था। इसी अवधि में भारत का कुल तेल आयात 4.88 मिलियन बैरल प्रतिदिन रहा और ओपेक की हिस्सेदारी घटकर 48.5 प्रतिशत हो गई।

तालिका 2: भारत के कच्चे तेल आयात में रूस और ओपेक की भूमिका

संकेतक	2024-25 / उपलब्ध अवधि	मूल्य
भारत का कुल कच्चा तेल आयात	वित्त वर्ष 2024-25	4.88 मिलियन बैरल प्रतिदिन
रूस से भारत का कच्चा तेल आयात	वित्त वर्ष 2024-25	1.76 मिलियन बैरल प्रतिदिन
भारत के तेल आयात में रूस की हिस्सेदारी	वित्त वर्ष 2024-25	36 प्रतिशत
भारत के तेल आयात में ओपेक की हिस्सेदारी	वित्त वर्ष 2024-25	48.5 प्रतिशत
रूस की हिस्सेदारी	कैलेंडर वर्ष 2025	33.3 प्रतिशत
ओपेक की हिस्सेदारी	कैलेंडर वर्ष 2025	50 प्रतिशत

स्रोत: रॉयटर्स, 2025 और 2026.

यह तालिका बताती है कि भारत ने ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण किया। भारत ने पश्चिमी दबावों के बावजूद रूस से तेल खरीदा, लेकिन इसे वैचारिक पक्षधरता के रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्रीय हित और ऊर्जा सुरक्षा की आवश्यकता के रूप में प्रस्तुत किया। यही सामरिक स्वायत्तता का व्यावहारिक उदाहरण है।

चीन के साथ सीमा और सामरिक चुनौतियाँ

भारत-चीन संबंध मोदी युग में सहयोग, प्रतिस्पर्धा और तनाव तीनों से प्रभावित रहे हैं। चीन भारत का बड़ा व्यापारिक साझेदार है, लेकिन सीमा विवाद, गलवान संघर्ष, पाकिस्तान-चीन गठजोड़, हिंद महासागर में चीनी उपस्थिति और बेल्ट एंड रोड पहल भारत के लिए गंभीर रणनीतिक चुनौतियाँ हैं। 2020 के गलवान संघर्ष के बाद भारत ने चीन के प्रति अधिक सतर्क नीति अपनाई। सीमा पर सैन्य तैनाती बढ़ाई गई, आधारभूत ढाँचे को मजबूत किया गया और आर्थिक स्तर पर भी कुछ प्रतिबंधात्मक कदम उठाए गए। अक्टूबर 2024 में भारत और चीन के बीच देपसांग और डेमचोक क्षेत्रों में गंभीर व्यवस्था पर सहमति बनी, जिसके बाद विदेश मंत्रालय ने संसद में बताया कि 21 अक्टूबर 2024 की सहमति के बाद इन क्षेत्रों में disengagement की प्रक्रिया आगे बढ़ी। भारत की चीन नीति पूर्ण टकराव पर आधारित नहीं



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-

4176

है। भारत ब्रिक्स और एस.सी.ओ. जैसे मंचों में चीन के साथ बैठता है, पर क्वाड और इंडो-पैसिफिक नीति के माध्यम से शक्ति-संतुलन भी करता है। इस प्रकार भारत चीन के साथ "संवाद और संतुलन" दोनों की नीति अपनाता है।

क्वाड और इंडो-पैसिफिक नीति

क्वाड अर्थात चतुर्भुज सुरक्षा संवाद में भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं। मोदी युग में यह मंच भारत की इंडो-पैसिफिक नीति का महत्वपूर्ण आधार बनकर उभरा है। भारत के लिए इंडो-पैसिफिक क्षेत्र केवल समुद्री भू-राजनीति का विषय नहीं है, बल्कि यह व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा, ऊर्जा आपूर्ति, समुद्री संसाधनों, तकनीकी सहयोग, आपदा राहत और क्षेत्रीय स्थिरता से भी जुड़ा हुआ है। भारत का अधिकांश समुद्री व्यापार हिंद महासागर और प्रशांत महासागर से जुड़े मार्गों के माध्यम से होता है, इसलिए इस क्षेत्र में स्वतंत्र, खुली, समावेशी और नियम-आधारित व्यवस्था भारत के राष्ट्रीय हितों के लिए आवश्यक है। क्वाड इसी उद्देश्य को आगे बढ़ाने वाला मंच है। इसका लक्ष्य किसी देश के विरुद्ध औपचारिक सैन्य गठबंधन बनाना नहीं है, बल्कि इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में स्थिरता, सहयोग और संतुलन बनाए रखना है। मई 2026 के क्वाड विदेश मंत्रियों के संयुक्त वक्तव्य में भी स्वतंत्र और खुले इंडो-पैसिफिक, खुले एवं स्थिर ऊर्जा बाजारों और विविध आपूर्ति श्रृंखलाओं पर बल दिया गया। इसी बैठक में क्वाड इंडो-पैसिफिक ऊर्जा सुरक्षा पहल की घोषणा की गई, जिसका उद्देश्य क्षेत्रीय ऊर्जा-सुरक्षा और ऊर्जा-आपूर्ति की मजबूती को बढ़ाना है। भारत के लिए क्वाड का महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि यह समुद्री सुरक्षा, स्वास्थ्य सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, महत्वपूर्ण तकनीक, साइबर सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन और आधारभूत संरचना जैसे व्यावहारिक क्षेत्रों में सहयोग प्रदान करता है। 2024 के क्वाड नेताओं के तथ्य-पत्र में भी समुद्री क्षेत्र की जागरूकता, महामारी-नियंत्रण, प्राकृतिक आपदा प्रतिक्रिया, डिजिटल और भौतिक आधारभूत संरचना, जलवायु तथा साइबर सुरक्षा को प्रमुख सहयोग-क्षेत्र बताया गया था। फिर भी भारत क्वाड को सैन्य गठबंधन में बदलने से बचता है, क्योंकि उसकी विदेश नीति सामरिक स्वायत्तता पर आधारित है। भारत अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ सहयोग करता है, लेकिन रूस, ब्रिक्स, एस.सी.ओ. और वैश्विक दक्षिण के देशों के साथ भी संबंध बनाए रखता है। इस प्रकार क्वाड भारत की चीन-केन्द्रित सुरक्षा चिंता का केवल एक पक्ष नहीं है, बल्कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की स्वतंत्र, संतुलित और राष्ट्रीय हित आधारित इंडो-पैसिफिक नीति का प्रभावी साधन है।

जी-20 में भारत की भूमिका



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

वर्ष 2023 में भारत की जी-20 अध्यक्षता मोदी युग की विदेश नीति की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में देखी जाती है। जी-20 विश्व की प्रमुख विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं का ऐसा मंच है, जहाँ वैश्विक आर्थिक सहयोग, वित्तीय स्थिरता, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा संकट और तकनीकी परिवर्तन जैसे मुद्दों पर चर्चा होती है। भारत ने अपनी अध्यक्षता के दौरान "वसुधैव कुटुम्बकम्" अर्थात् "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य" की भावना को केंद्रीय विषय बनाया। इस विचार के माध्यम से भारत ने यह संदेश दिया कि वैश्विक समस्याओं का समाधान केवल शक्तिशाली देशों के हितों को ध्यान में रखकर नहीं, बल्कि पूरी मानवता की साझी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। भारत की अध्यक्षता में वैश्विक दक्षिण के देशों की समस्याओं को विशेष महत्व दिया गया। ऋण संकट, खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा, जलवायु वित्त, तकनीकी असमानता, स्वास्थ्य सहयोग और विकासशील देशों की आर्थिक चुनौतियों को जी-20 की चर्चा का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया गया। भारत की सबसे बड़ी कूटनीतिक सफलता अफ्रीकी संघ को जी-20 का स्थायी सदस्य बनवाना रही, जिससे जी-20 की प्रतिनिधित्व क्षमता और अधिक व्यापक हुई। इससे यह स्पष्ट हुआ कि भारत केवल अपने राष्ट्रीय हितों तक सीमित नहीं है, बल्कि विकासशील देशों की आवाज को वैश्विक मंच पर प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना चाहता है। रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण उस समय विश्व राजनीति में गहरे मतभेद थे। पश्चिमी देश रूस की आलोचना पर बल दे रहे थे, जबकि रूस और उसके समर्थक देश अलग दृष्टिकोण रखते थे। ऐसी परिस्थिति में नई दिल्ली घोषणा-पत्र पर सर्वसम्मति बनना भारत की संतुलित और सफल कूटनीति का प्रमाण था। भारत ने किसी पक्ष विशेष की भाषा अपनाने के बजाय संवाद, सहमति और साझा विकास पर आधारित दृष्टिकोण अपनाया। जी-20 अध्यक्षता ने भारत को पश्चिमी देशों और वैश्विक दक्षिण के बीच सेतु के रूप में स्थापित किया। इस प्रकार जी-20 में भारत की भूमिका ने यह सिद्ध किया कि मोदी युग की भारतीय विदेश नीति आत्मविश्वासी, व्यावहारिक, बहुपक्षीय और राष्ट्रीय हित के साथ-साथ वैश्विक कल्याण पर आधारित है।

ब्रिक्स और एस.सी.ओ. में भारत

ब्रिक्स और एससीओ में भारत की भागीदारी मोदी युग की सामरिक स्वायत्तता और बहुध्रुवीय विदेश नीति को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। ब्रिक्स भारत के लिए केवल आर्थिक सहयोग का मंच नहीं है, बल्कि यह वैश्विक शासन में सुधार, विकासशील देशों की भागीदारी, वित्तीय संस्थाओं के लोकतंत्रीकरण और पश्चिम-केंद्रित विश्व व्यवस्था के विकल्प की दिशा में एक प्रभावी बहुपक्षीय मंच है। वर्तमान विस्तार के बाद ब्रिक्स में ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका के साथ मिस्र, इथियोपिया, ईरान, संयुक्त अरब अमीरात, इंडोनेशिया और



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-

4176

सऊदी अरब जैसे देश भी शामिल हैं, इससे यह समूह वैश्विक दक्षिण की व्यापक आवाज के रूप में और अधिक प्रभावशाली हुआ है। आधिकारिक ब्रिक्स विवरण के अनुसार यह समूह विश्व की बड़ी उभरती अर्थव्यवस्थाओं और विकासशील देशों को एक साथ लाता है तथा वैश्विक जनसंख्या और वैश्विक अर्थव्यवस्था के बड़े हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है। भारत ब्रिक्स को किसी पश्चिम-विरोधी गठबंधन के रूप में नहीं देखता, बल्कि इसे बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, आर्थिक सहयोग, विकास वित्त, व्यापारिक विविधीकरण और वैश्विक दक्षिण की सामूहिक आवाज के मंच के रूप में उपयोग करता है। इसी कारण भारत ब्रिक्स में चीन और रूस के साथ रहते हुए भी अमेरिका, यूरोप, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ अपने संबंधों को समान रूप से आगे बढ़ाता है। दूसरी ओर, एससीओ में भारत की सदस्यता यूरेशियाई राजनीति, मध्य एशिया, क्षेत्रीय सुरक्षा और आतंकवाद-विरोधी सहयोग की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। विदेश मंत्रालय के अनुसार भारत जून 2017 में अस्ताना शिखर सम्मेलन में एससीओ का पूर्ण सदस्य बना और सितंबर 2022 से जुलाई 2023 तक भारत ने पहली बार एससीओ की अध्यक्षता की। एससीओ भारत को रूस, चीन, मध्य एशियाई देशों और अन्य एशियाई शक्तियों के साथ संवाद का अवसर देता है। भारत इस मंच के माध्यम से आतंकवाद, कट्टरवाद, अलगाववाद, संपर्क-सुविधा, ऊर्जा और क्षेत्रीय स्थिरता जैसे मुद्दों पर अपनी चिंताओं को प्रस्तुत करता है। यद्यपि एससीओ में चीन और पाकिस्तान की उपस्थिति भारत के लिए चुनौती भी है, फिर भी भारत इस मंच से दूरी बनाने के बजाय अपने हितों के अनुसार इसका उपयोग करता है। इस प्रकार ब्रिक्स और एससीओ में भारत की सक्रियता यह सिद्ध करती है कि भारत किसी एक शक्ति-गुट तक सीमित नहीं है, बल्कि बहुध्रुवीय विश्व में स्वतंत्र, संतुलित और राष्ट्रीय हित आधारित कूटनीति का अनुसरण करता है।

रक्षा सहयोग और आत्मनिर्भरता

मोदी युग में रक्षा कूटनीति और रक्षा आत्मनिर्भरता विदेश नीति के महत्वपूर्ण साधन बने हैं। भारत ने अमेरिका, रूस, फ्रांस, इजरायल, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ रक्षा सहयोग बढ़ाया है। इसके साथ ही भारत ने स्वदेशी रक्षा उत्पादन और रक्षा निर्यात पर भी बल दिया है। प्रेस सूचना ब्यूरो के अनुसार भारत का रक्षा बजट 2013-14 में ₹2.53 लाख करोड़ था, जो 2026-27 में बढ़कर ₹7.85 लाख करोड़ हो गया। स्वदेशी रक्षा उत्पादन 2014-15 में ₹46,429 करोड़ था, जो 2025-26 में ₹1.78 लाख करोड़ हो गया। रक्षा निर्यात 2013-14 में ₹686 करोड़ था, जो 2025-26 में ₹38,424 करोड़ तक पहुँच गया।

तालिका 3: भारत के रक्षा क्षेत्र में परिवर्तन



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

संकेतक	प्रारंभिक वर्ष/मूल्य	नवीनतम वर्ष/मूल्य
रक्षा बजट	2013-14: ₹2.53 लाख करोड़	2026-27: ₹7.85 लाख करोड़
स्वदेशी रक्षा उत्पादन	2014-15: ₹46,429 करोड़	2025-26: ₹1.78 लाख करोड़
रक्षा निर्यात	2013-14: ₹686 करोड़	2025-26: ₹38,424 करोड़
रक्षा उत्पादों का निर्यात	—	80 से अधिक देशों में
रक्षा निर्यातक फर्म	—	145 फर्म
रक्षा निर्यात लक्ष्य	—	2029 तक ₹50,000 करोड़

स्रोत: प्रेस सूचना ब्यूरो, रक्षा मंत्रालय संबंधी पृष्ठभूमि-पत्र, 2026. यह तालिका दर्शाती है कि भारत रक्षा क्षेत्र में केवल आयातक देश के रूप में नहीं रहना चाहता, बल्कि रक्षा उत्पादन और निर्यात में भी अपनी भूमिका बढ़ा रहा है। रक्षा आत्मनिर्भरता सामरिक स्वायत्तता को मजबूत करती है, क्योंकि इससे भारत को संकट के समय बाहरी निर्भरता कम करनी पड़ती है।

मोदी युग की विदेश नीति की प्रमुख विशेषताएँ

मोदी युग की भारतीय विदेश नीति की प्रमुख विशेषता इसकी सक्रियता, व्यावहारिकता और राष्ट्रीय हितों पर आधारित दृष्टि है। वर्ष 2014 के बाद भारत ने विदेश नीति को केवल परंपरागत राजनयिक संबंधों तक सीमित न रखकर उसे वैश्विक नेतृत्व, आर्थिक विकास, सुरक्षा, ऊर्जा, तकनीक और सांस्कृतिक संपर्क से भी जोड़ा। इस दौर में भारत ने पड़ोसी देशों के साथ "पड़ोसी प्रथम" नीति, खाड़ी देशों के साथ ऊर्जा और श्रमिक हितों की नीति, अफ्रीकी देशों के साथ विकास सहयोग तथा अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और यूरोपीय देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी को मजबूत किया। इससे भारतीय विदेश नीति अधिक सक्रिय और परिणामोन्मुख दिखाई देती है। दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता बहु-संरेखण है। भारत किसी एक शक्ति-गुट तक सीमित नहीं है, बल्कि क्वाड, ब्रिक्स, एस.सी.ओ., जी-20, आसियान और संयुक्त राष्ट्र जैसे विभिन्न मंचों पर समान रूप से सक्रिय है। इससे भारत को अलग-अलग शक्ति-केंद्रों के साथ सहयोग करने और अपने हितों की रक्षा करने का अवसर मिलता है। तीसरी विशेषता राष्ट्रीय हित की प्राथमिकता है। रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद रूस से तेल खरीदना, अमेरिका के साथ रक्षा और तकनीकी सहयोग बढ़ाना, चीन के साथ सीमा पर सतर्कता रखना तथा वैश्विक दक्षिण की आवाज उठाना इस बात को स्पष्ट करता है कि भारत अपनी विदेश नीति बाहरी दबावों के बजाय अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार निर्धारित



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-

4176

करता है। चौथी विशेषता सुरक्षा और अर्थव्यवस्था का संयोजन है। वर्तमान समय में विदेश नीति केवल राजनीतिक संबंधों का विषय नहीं रही, बल्कि व्यापार, निवेश, ऊर्जा सुरक्षा, रक्षा उत्पादन, आपूर्ति श्रृंखला, डिजिटल तकनीक और समुद्री सुरक्षा से भी जुड़ गई है। मोदी युग में भारत ने रक्षा आत्मनिर्भरता, ऊर्जा स्रोतों के विविधीकरण और तकनीकी साझेदारी को विदेश नीति का महत्वपूर्ण अंग बनाया। पाँचवीं विशेषता बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का समर्थन है। भारत ऐसी विश्व व्यवस्था चाहता है जिसमें किसी एक शक्ति का प्रभुत्व न हो और विकासशील देशों की भूमिका को उचित महत्व मिले। इस प्रकार मोदी युग की विदेश नीति सक्रिय, संतुलित, आत्मविश्वासी, बहुआयामी और सामरिक स्वायत्तता पर आधारित दिखाई देती है।

निष्कर्ष

2014 से वर्तमान तक भारतीय विदेश नीति में सामरिक स्वायत्तता और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की अवधारणा ने केंद्रीय स्थान प्राप्त किया है। मोदी युग में भारत ने विदेश नीति को अधिक सक्रिय, व्यावहारिक और राष्ट्रीय हित-केंद्रित बनाया है। भारत ने अमेरिका के साथ रणनीतिक साझेदारी बढ़ाई, रूस के साथ पुरानी मित्रता और ऊर्जा सहयोग बनाए रखा, चीन के साथ सीमा सुरक्षा पर दृढ़ता दिखाई, क्वाड के माध्यम से इंडो-पैसिफिक में भूमिका बढ़ाई, जी-20 में वैश्विक नेतृत्व प्रस्तुत किया और ब्रिक्स तथा एस.सी.ओ. में बहुध्रुवीयता को मजबूत किया। इस अध्ययन का निष्कर्ष है कि मोदी युग की भारतीय विदेश नीति न तो पारंपरिक गुटनिरपेक्षता तक सीमित है और न ही किसी एक शक्ति-गुट की अधीनस्थ नीति है। यह सामरिक स्वायत्तता पर आधारित बहु-संरक्षित विदेश नीति है। इसका मुख्य उद्देश्य भारत की सुरक्षा, आर्थिक विकास, ऊर्जा सुरक्षा, वैश्विक प्रतिष्ठा और स्वतंत्र निर्णय-क्षमता को मजबूत करना है। वर्तमान बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत एक संतुलनकारी, संवादकारी और उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में आगे बढ़ रहा है।

संदर्भ सूची:-

1. ब्रुस्टर, डी. (2014). इंडियाज ओशन: द स्टोरी ऑफ इंडियाज बिड फॉर रीजनल लीडरशिप. रूटलेज।
2. ब्रुस्टर, डी. (2018). इंडिया एंड चाइना ऐट सी: कम्पटीशन फॉर नेवल डॉमिनेंस इन द इंडियन ओशन. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. बाजपेयी, के. (2021). इंडिया वर्सेस चाइना: व्हाई दे आर नॉट फ्रेंड्स. जगर्नॉट बुक्स।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

4. मोहान, सी. आर. (2003). क्रॉसिंग द रुबिकॉन: द शेपिंग ऑफ इंडियाज न्यू फॉरेन पॉलिसी. वाइकिंग।
5. मलोन, डी. एम., मोहन, सी. आर., और राघवन, एस. (संपा.). (2015). द ऑक्सफोर्ड हैंडबुक ऑफ इंडियन फॉरेन पॉलिसी. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. हॉल, आई. (2015). इज अ 'मोदी डॉक्ट्रिन' इमर्जिंग इन इंडियन फॉरेन पॉलिसी? ऑस्ट्रेलियन जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स, 69(3), 247–252.
7. हॉल, आई. (2019). मोदी एंड द रिइन्वेनशन ऑफ इंडियन फॉरेन पॉलिसी. ब्रिस्टल यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. पॉल, टी. वी. (2024). द अनफिनिशड क्वेस्ट: इंडियाज सर्च फॉर मेजर पावर स्टेटस फ्रॉम नेहरू टू मोदी. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
9. पंत, एच. वी. (2016). इंडियन फॉरेन पॉलिसी: एन ओवरव्यू. ओरिएंट ब्लैकस्वान।
10. पंत, एच. वी., और जोशी, वाई. (2016). द यू.एस. पिवट एंड इंडियन फॉरेन पॉलिसी: एशियाज इवॉल्विंग बैलेंस ऑफ पावर. पालग्रेव मैकमिलन।
11. राजगोपालन, आर. पी. (2020). इवेसिव बैलेंसिंग: इंडियाज अनवायबल इंडो-पैसिफिक स्ट्रैटेजी. इंटरनेशनल अफेयर्स, 96(1), 75–93.
12. छाको, पी. (2012). इंडियन फॉरेन पॉलिसी: द पॉलिटिक्स ऑफ पोस्टकोलोनियल आइडेंटिटी फ्रॉम 1947 टू 2004. रूटलेज।
13. अयर्स, ए. (2018). आवर टाइम हैज कम: हाउ इंडिया इज मेकिंग इट्स प्लेस इन द वर्ल्ड. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।